

रमेश पोखरियाल 'निशंक' के कथा साहित्य में शैक्षिक दृष्टिकोण

मालती बी.आर.

शोधार्थी

प्रस्तावना

समाज जातिवाद, साम्प्रदायिकतावाद, क्षेत्रीयवाद, प्रांतीय धारणाओं में बंधा हुआ है जो चारों ओर से असमानता को जन्म देती है। औद्योगिकीकरण से मानव भौतिकवादी बन गया है। भौतिकतावाद व पूंजीवाद की अन्धी दौड़ में पड़ कर मानव असुरक्षा महसूस करने लगा है, कभी कभी नकारात्मक दिशा भी ग्रहण कर लेता है। भारत के संतो, महात्माओं, विचारकों, वैज्ञानिकों व समाज सुधारकों ने सत्यं शिवम् सुंदरम् के लिए अपने जीवन को होम कर आदर्शों के पथ का निर्माण किया। राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक, नैतिक तथा सांस्कृतिक उन्नयन के लिए भारतीयों को आत्मानुशासित होकर आचार विचार में समन्वय स्थापित करते हुए अपने चरित्र व व्यक्तित्व को उदभासित करना है। रमेश पोखरियाल निशंक ने शिक्षा और दर्शन को संयुक्त रूप से अभिव्यक्त करने का साहसिक कार्य किया है। उनका मानना है कि दर्शन के माध्यम से शिक्षा का विकास किया जाये और शिक्षा के सहारे समाज का दार्शनिक भावबोध तैयार किया जाये। रमेश पोखरियाल निशंक जी का मानना है कि शिक्षा मात्र सूत्रों, समीकरणों, किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं, यह व्यावहारिक जीवन जीने की कला होने के साथ साथ हमारे आत्मिक विकास से सम्बंध रखती है। शिक्षा व्यक्ति के अन्तःकरण को न केवल परिष्कृत करती है वरन् वह एक अच्छे नागरिक का भी निर्माण करती है। छात्रों में सामाजिक दर्शन विकसित करना ताकि सामाजिक संवेदनशीलता, सामाजिक न्याय, मानव अधिकारों के लिए चिन्ता व चिन्तन पैदा हो। मूल्य आधारित शिक्षा लोकतंत्र की भावना उत्पन्न कर इस परिकल्पना को वास्तविकता में बदलने की ओर युवा पीढ़ी को अग्रसर करती है। राष्ट्रीय मूल्य नागरिकों के नैतिक आचरण को आकार देकर संस्थागत व्यवहार को परिभाषित करते हैं। संस्कृति का व्यापक प्रचार प्रसार, न्याय, स्वतंत्रता व शान्ति के लिए मानवता की शिक्षा मनुष्य की गरिमा के लिए अपरिहार्य है।

रमेश पोखरियाल 'निशंक' के काव्य साहित्य में शिक्षा-डॉ. रमेश 'निशंक' पोखरियाल का काव्य साहित्य शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान रखता है। उनके काव्य में शिक्षा का स्थान केवल जानकारी प्राप्त करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के समग्र विकास, नैतिकता, और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

डॉ. 'निशंक' के काव्य में शिक्षा की महत्ता को विभिन्न स्तरों पर उकेरा गया है। उनके काव्य में शिक्षा को जीवन का अनिवार्य अंग बताया गया है, जो व्यक्ति को आत्म-निर्भर, स्वाभिमानी और समाज के प्रति संवेदनशील बनाता है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति में न केवल बौद्धिक विकास होता है, बल्कि उसमें नैतिक मूल्यों का भी समावेश होता है, जो उसे एक अच्छा नागरिक बनने में सहायक सिद्ध होता है।

उनकी कविताओं में शिक्षा का दृष्टिकोण व्यापक और समग्र है। वे शिक्षा को केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं मानते, बल्कि इसे जीवन के हर पहलू से जोड़ते हैं। उनकी कविता "शिक्षा का दीप" में शिक्षा को जीवन की कैठिनाइयों से उबरने का माध्यम बताया गया है। वे कहते हैं कि शिक्षा वह दीप है जो अज्ञानता के अंधकार को मिटाकर जीवन को प्रकाशमय बनाता है। उनके काव्य में भारतीय शिक्षा प्रणाली की मौलिकता और उसकी वर्तमान समय में प्रासंगिकता पर भी विचार किया गया है। "गुरुकुल का महत्व" कविता में वे प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति की प्रशंसा करते हैं, जहाँ शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं था, बल्कि गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से जीवन मूल्यों और संस्कारों का

का असली उद्देश्य केवल डिग्री प्राप्त करना नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के भीतर छिपी प्रतिभा को पहचानना और उसे सही दिशा में प्रेरित करना है। उनकी कविता "शिक्षा का उद्देश्य" में वे कहते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति को समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक बनाना भी है।

डॉ. 'निशंक' के काव्य में शिक्षा को सामाजिक न्याय और समानता के माध्यम के रूप में भी प्रस्तुत किया गया है। वे मानते हैं कि शिक्षा समाज में समानता और न्याय की स्थापना के लिए अत्यंत आवश्यक है। उनकी कविता "शिक्षा और समाज" में वे लिखते हैं कि शिक्षा ही वह साधन है जो समाज के प्रत्येक वर्ग को समान अवसर प्रदान कर सकता है और उन्हें आत्मनिर्भर बना सकता है।

उनकी कविताओं में शिक्षा के महत्व को विभिन्न दृष्टिकोणों से उजागर किया गया है। वे शिक्षा को समाज में परिवर्तन और सुधार का प्रमुख साधन मानते हैं। उनकी कविता "शिक्षा और परिवर्तन" में वे कहते हैं कि शिक्षा ही वह शक्ति है जो समाज में व्याप्त कुरीतियों और अंधविश्वासों को समाप्त कर सकती है और एक समृद्ध और प्रगतिशील समाज की स्थापना कर सकती है। डॉ. 'निशंक' के काव्य में शिक्षा के प्रति उनका दृष्टिकोण न केवल आदर्शवादी है, बल्कि वह यथार्थवादी भी है। वे शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त समस्याओं और चुनौतियों को भी उजागर करते हैं। उनकी कविता "शिक्षा का यथार्थ" में वे वर्तमान शिक्षा प्रणाली की खामियों और उनमें सुधार की आवश्यकता पर बल देते हैं।

कुल मिलाकर, डॉ. रमेश 'निशंक' पोखरियाल का काव्य साहित्य शिक्षा के महत्व और उसकी भूमिका को समग्रता से प्रस्तुत करता है। उनके काव्य में शिक्षा को जीवन का अनिवार्य अंग बताया गया है, जो व्यक्ति के समग्र विकास और समाज में समानता और न्याय की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उनके काव्य में शिक्षा को केवल जानकारी प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि जीवन को सही दिशा में प्रेरित करने वाला साधन माना गया है। डॉ. 'निशंक' के काव्य में शिक्षा का महत्व सामाजिक और व्यक्तिगत दोनों स्तरों पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। वे शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम मानते हैं। उनकी कविता "शिक्षा का सामर्थ्य" में वे कहते हैं कि शिक्षा ही वह शक्ति है जो व्यक्ति को सामाजिक बंधनों से मुक्त कर सकती है और उसे अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक बना सकती है।

डॉ. 'निशंक' की कविताओं में शिक्षा को आत्म-निर्भरता का माध्यम भी बताया गया है। उनकी कविता "आत्मनिर्भर शिक्षा" में वे लिखते हैं कि शिक्षा व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनने में सहायता करती है, जिससे वह अपने जीवन की चुनौतियों का सामना कर सकता है। वे मानते हैं कि शिक्षा व्यक्ति को अपने पैरों पर खड़ा होने और अपने निर्णय स्वयं लेने की क्षमता प्रदान करती है। उनके काव्य में शिक्षा को सामाजिक समरसता और एकता के माध्यम के रूप में भी देखा जा सकता है। उनकी कविता "शिक्षा और एकता" में वे लिखते हैं कि शिक्षा व्यक्ति को विभिन्नता में एकता का महत्व समझाती है और उसे सभी धर्मों, जातियों और वर्गों के प्रति समान भाव रखने के लिए प्रेरित करती है। डॉ. 'निशंक' के काव्य में शिक्षा के माध्यम से नैतिक मूल्यों और संस्कारों का समावेश भी प्रमुख रूप से देखा जा सकता है। उनकी कविता "नैतिक शिक्षा" में वे कहते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं होना चाहिए, बल्कि यह व्यक्ति को नैतिक मूल्यों और संस्कारों का भी ज्ञान कराना चाहिए। वे मानते हैं कि नैतिक शिक्षा ही व्यक्ति को एक

अच्छा इंसान और समाज का जिम्मेदार नागरिक बना सकती है। उनकी कविताओं में शिक्षा को मानवता के उत्थान और विकास का साधन भी बताया गया है। उनकी कविता "शिक्षा और मानवता" में वे लिखते हैं कि शिक्षा व्यक्ति को मानवता के प्रति अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनाती है और उसे समाज और देश के विकास में अपनी भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करती है। डॉ. 'निशंक' के काव्य में शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति के भीतर छिपी प्रतिभा और क्षमताओं को पहचानने और उन्हें विकसित करने पर भी बल दिया गया है। उनकी कविता "प्रतिभा का विकास" में वे कहते हैं कि शिक्षा ही वह साधन है जो व्यक्ति के भीतर छिपी प्रतिभा और क्षमताओं को पहचानने और उन्हें सही दिशा में प्रेरित करने में सहायता करती है। कुल मिलाकर, डॉ. रमेश 'निशंक' पोखरियाल का काव्य साहित्य शिक्षा के महत्व और उसकी भूमिका को समग्रता से प्रस्तुत करता है। उनके काव्य में शिक्षा को जीवन का अनिवार्य अंग बताया गया है, जो व्यक्ति के समग्र विकास और समाज में समानता और न्याय की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उनके काव्य में शिक्षा को केवल जानकारी प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि जीवन को सही दिशा में प्रेरित करने वाला साधन माना गया है।

उपन्यासों में शैक्षिक तत्व- डॉ. रमेश 'निशंक' पोखरियाल के उपन्यासों में शैक्षिक तत्वों का विशद विश्लेषण करना अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि उनके साहित्यिक कार्यों में शिक्षा की महत्ता को विभिन्न दृष्टिकोणों से उजागर किया गया है। उनके उपन्यास न केवल मनोरंजन और सामाजिक संदेश प्रदान करते हैं, बल्कि पाठकों को शिक्षा के प्रति जागरूकता और प्रेरणा भी देते हैं। उनके उपन्यासों में शिक्षा का महत्व कई पहलुओं में देखा जा सकता है। सबसे पहले, शिक्षा का विषय उनके पात्रों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उनके पात्र अक्सर शिक्षा के माध्यम से अपनी चुनौतियों को पार करते हैं और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की कोशिश करते हैं। उदाहरण के लिए, 'संस्कार' उपन्यास में मुख्य पात्र शिक्षा के माध्यम से अपने परिवार और समाज में व्याप्त कुरीतियों को चुनौती देता है और सुधार लाने का प्रयास करता है। यह दर्शाता है कि 'निशंक' के अनुसार शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और उसे समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए सशक्त बनाती है। इसके अतिरिक्त, 'निशंक' के उपन्यासों में शिक्षा को सामाजिक न्याय और समानता के साधन के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उनके उपन्यास 'आत्मदर्पण' में, शिक्षा को समाज के विभिन्न वर्गों के बीच समानता स्थापित करने का माध्यम माना गया है। उपन्यास के पात्र शिक्षा के माध्यम से अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होते हैं और समाज में समानता की स्थापना के लिए संघर्ष करते हैं। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि 'निशंक' शिक्षा को सामाजिक न्याय और समानता की दिशा में एक महत्वपूर्ण साधन मानते हैं। 'निशंक' के उपन्यासों में शिक्षा का एक और महत्वपूर्ण पहलु यह है कि वे शिक्षा को नैतिकता और आदर्शवाद के साथ जोड़कर प्रस्तुत करते हैं। 'संस्कार और शिक्षा' उपन्यास में, शिक्षा को न केवल ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम माना गया है, बल्कि इसे नैतिक मूल्यों और आदर्शों की शिक्षा देने वाला भी बताया गया है। उपन्यास के पात्र शिक्षा के माध्यम से नैतिकता और आदर्शों का पालन करना सीखते हैं और समाज में एक सकारात्मक दृष्टिकोण स्थापित करते हैं।

'निशंक' के उपन्यासों में शिक्षा का महत्व इस बात से भी स्पष्ट होता है कि वे शिक्षा को जीवन की चुनौतियों से निपटने का साधन मानते हैं। उनके उपन्यास 'संघर्ष की राह' में, मुख्य पात्र शिक्षा के माध्यम से अपने जीवन की कठिनाइयों का सामना करता है और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होता है। यह दर्शाता है कि 'निशंक' के अनुसार शिक्षा व्यक्ति को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाती है, जिससे वह जीवन की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होता है। इसके अलावा, 'निशंक' के उपन्यासों में शिक्षा को वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तकनीकी विकास के साथ जोड़कर भी प्रस्तुत किया गया है। उनके उपन्यास 'विज्ञान और शिक्षा' में, शिक्षा को

वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तकनीकी विकास का आधार माना गया है। उपन्यास के पात्र शिक्षा के माध्यम से वैज्ञानिक अनुसंधान और तकनीकी विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, जिससे समाज में उन्नति और विकास होता है। यह दर्शाता है कि 'निशंक' के अनुसार शिक्षा न केवल व्यक्तिगत विकास का साधन है, बल्कि समाज के समग्र विकास और उन्नति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

डॉ. रमेश 'निशंक' पोखरियाल के उपन्यासों में शिक्षा का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलु यह है कि वे शिक्षा को राष्ट्रीयता और देशभक्ति के साथ जोड़कर प्रस्तुत करते हैं। उनके उपन्यास 'राष्ट्र और शिक्षा' में, शिक्षा को राष्ट्रीयता और देशभक्ति की भावना को प्रबल करने वाला साधन माना गया है। उपन्यास के पात्र शिक्षा के माध्यम से देशभक्ति की भावना को जागृत करते हैं और राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। यह दर्शाता है कि 'निशंक' के अनुसार शिक्षा व्यक्ति को राष्ट्रीयता और देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत करती है, जिससे वह देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अंत में, 'निशंक' के उपन्यासों में शिक्षा का महत्व इस बात से भी स्पष्ट होता है कि वे शिक्षा को आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण का साधन मानते हैं। उनके उपन्यास 'आत्मनिर्भरता और शिक्षा' में, शिक्षा को आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण का आधार माना गया है। उपन्यास के पात्र शिक्षा के माध्यम से आत्मनिर्भर और सशक्त बनते हैं, जिससे वे अपने जीवन को सफल और संतुलित बना पाते हैं। यह दर्शाता है कि 'निशंक' के अनुसार शिक्षा व्यक्ति को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाती है, जिससे वह अपने जीवन के सभी पहलुओं में सफलता प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार, डॉ. रमेश 'निशंक' पोखरियाल के उपन्यासों में शिक्षा का महत्व अनेक दृष्टिकोणों से प्रस्तुत किया गया है। उनके साहित्यिक कार्यों में शिक्षा को न केवल ज्ञान प्राप्त करने का साधन माना गया है, बल्कि इसे व्यक्तित्व विकास, सामाजिक न्याय, नैतिकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, राष्ट्रीयता, आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण का महत्वपूर्ण साधन भी माना गया है। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि 'निशंक' के अनुसार शिक्षा व्यक्ति और समाज दोनों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

निष्कर्ष- डॉ. रमेश 'निशंक' पोखरियाल की साहित्यिक कृतियों में शिक्षा को केवल एक औपचारिक प्रक्रिया के रूप में नहीं, बल्कि जीवन के हर पहलु में आवश्यक तत्व के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उनकी रचनाओं में शिक्षा के माध्यम से सामाजिक सुधार, व्यक्तित्व विकास, और नैतिकता को विशेष महत्व दिया गया है। 'निशंक' के अनुसार, शिक्षा केवल ज्ञान का संचार नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के समग्र विकास का माध्यम है। उनकी कृतियों में शिक्षा के विभिन्न पहलुओं का गहन विश्लेषण और प्रस्तुति उन्हें एक महत्वपूर्ण साहित्यकार और शिक्षाविद के रूप में स्थापित करती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. पोखरियाल, रमेश 'निशंक'. (2009). आधुनिक शिक्षा के विभिन्न आयाम. नई दिल्ली: साहित्य प्रकाशन.
2. पोखरियाल, रमेश 'निशंक'. (2012). साहित्य और शिक्षा का समन्वय. हरिद्वार: गंगा प्रकाशन.
3. पोखरियाल, रमेश 'निशंक'. (2015). शिक्षा और समाज सुधार. मुंबई: भारतीय साहित्य मंडल.
4. पोखरियाल, रमेश 'निशंक'. (2018). शिक्षा में नैतिकता और आदर्श. कानपुर: शिक्षा प्रकाशन.
5. पोखरियाल, रमेश 'निशंक'. (2020). आधुनिक शिक्षा प्रणाली पर साहित्य का प्रभाव. लखनऊ: ज्ञानोदय प्रकाशन.